

परिवर्तन

साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी
त्रैमासिक ई-पत्रिका



आवरण चित्र
संदीप जायसवाल

प्रधान संपादक
महेश सिंह

अतिथि संपादक
डॉ. सितारे हिन्द

परिचय

'परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी' विमर्श केंद्रित (Peer-reviewed) त्रैमासिक ई-पत्रिका है। पत्रिका का उद्देश्य साहित्य, संस्कृति और सिनेमा के क्षेत्र में विमर्श व शोध को प्रोत्साहित करना है। कला जगत की विधागत विविधताओं को ध्यान में रखते हुए पत्रिका में कई वैचारिक स्तंभों का प्रावधान किया गया है जो इस प्रकार हैं- साहित्य और संस्कृति (आलेख), मीडिया और सिनेमा (आलेख), समकालीन विमर्श (दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श इत्यादि), शोध पत्र, कविता, कहानी, लोक साहित्य, रंगमंच, प्रवासी साहित्य, पुस्तक समीक्षा, साक्षात्कार, अनुवाद इत्यादि।

कला जगत के प्रमुख हस्ताक्षरों, सृजनकर्मियों और पाठकों का परिवर्तन पत्रिका में स्वागत है। हम उम्मीद करते हैं कि आप सभी अपने सार्थक लेखन और महत्वपूर्ण सुझाव के जरिये पत्रिका को एक सशक्त वैचारिक मंच के रूप में स्थापित करने हेतु सहायता करेंगे। यह पत्रिका जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्टूबर महीने में नियमित रूप से प्रकाशित की जाएगी।

पत्राचार

महेश सिंह

हिंदी विभाग

पांडिचेरी विश्वविद्यालय

पुदुच्चेरी - 605014

parivartanpatrika@gmail.com

gguhindi@gmail.com

www.parivartanpatrika.in

Mob. # +91 9489 246095

स्थायी पता

ग्राम, भलुआ; पोस्ट, परसिया; जिला, देवरिया; उत्तर

प्रदेश - 274 501

उद्घोषणा

पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्ति विचार रचनाकार के अपने हैं, जिससे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता से सम्बंधित किसी भी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होगा। रचना चयन का अंतिम अधिकार संपादक के पास सुरक्षित है। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र चेन्नई (Chennai) होगा।

© Parivartanpatrika 2016

All Right Reserved.

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	डॉ. सितारे हिन्द	1-3
शोध-पत्र /आलेख		
प्रगतिशील कविता : स्त्री अस्मिता	रामाश्रय पटेल	4-9
आधुनिक युग में कबीर की सामाजिक दर्शन की प्रासंगिकता	अमित कुमार रजक	10-13
'हत्पारे' और गहराता संकट	राना कुन्जर सिंह ठाकुर	14-18
'अंधेरे में' : एक विशिष्ट देन	डॉ. सुरजीत सिंह	19-23
चन्द्रकान्ता की कहानियों में कामकाजी स्त्रियों का जीवन संघर्ष	प्रेम कुमार	24-28
समकालीन हिंदी उपन्यास में स्त्री विमर्श और संघर्षरत स्त्रियाँ	डॉ. अर्चना दुबे	29-39
समकालीन कविता में सामाजिक सापेक्षता की अभिव्यक्ति (नीलेश रघुवंशी के काव्य संकलनों के संदर्भ में)	डॉ. प्रिया ए.	40-46
अशोक वाजपेयी की कविताओं के साथ कुछ दूर तक टहलते हुए	जीतेश्वरी	47-52
नव-वामपंथी कविताओं में अभिव्यक्त राजनीतिक व्यंग्य	बैजु के.	53-57
केलाश नारायण तिवारी के काव्य में राजनीतिक चेतना	दीपा	58-64
कुच्ची का कानून : प्राणीय स्त्रियों में उपजी समकालीन चेतना	मनोज वर्मा	65-68
खंड-खंड अग्नि के परिप्रेक्ष्य में अग्नि-परीक्षा की प्रासंगिकता	डॉ. उर्मिला पोरवाल सेठिया	69-77
किसान की अनवरत संघर्षगाथा का केंद्र बिंदु : फांस	हेमलता कुमारी	78-82
व्यंग्य और सामाजिक यथार्थ	रणजीत कुमार सिन्हा	83-86
सबसे बड़ा विकल्प खुला है आमहत्या का। (राजेश जोशी की 'विकल्प' कविता के संदर्भ में)	बर्नाली नाथ	87-90
भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य	ज्ञान चन्द्र पाल	91-102
मशीनों द्वारा संचालित मानव और 'जूजू' कहानी	डॉ. चित्रा	103-105
समकालीन मलयालम और हिन्दी कविता में बदलते सामाजिक संबन्ध	महेश . एस	106-112
'मानवीय सरोकारों की टकराहट से उत्पन्न कविताएँ'	दिनेश अहिरवार	113-119

समकालीन मलयालम और हिन्दी कविता में बदलते सामाजिक संबन्ध

महेश . एस

शोधार्थी, कोच्चिन विश्वविद्यालय
कोच्ची-22

समकालीनता बहुआयामी शब्द है। मलयालम और हिन्दी कविता में समकालीनता का अर्थ विशेष रूप से आधुनिकता के उत्तर-संदर्भ के साथ जुड़ा हुआ है। समकालीनता आधुनिकता की अगली कड़ी होने पर भी आधुनिकता के हर केन्द्रीकरण की प्रवृत्तियों को विचित्र कर के उभरी है। मलयालम के प्रसिद्ध आलोचक वत्सलन वातुशेरी के अनुसार "आधुनिकता तक मलयालम कविता सवर्ण सौन्दर्य बोध का ही आबंटन किया करती थी। सवर्ण लोगों की आर्थिक स्थिति में हुए हास के साथ अवर्ण तथा अल्पसंख्यकों की आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण मलयालम के सार्वजनिक संवाद क्षेत्र में तथा उसके माध्यम से कविता में अल्पसंख्यक तथा दलित एवं स्त्री सहित हाशिएकृत विशाल समाज का प्रवेश हुआ। हिन्दु सांस्कृतिक देशीय भावना का पूर्ण रूप से रिस गयी काव्य संस्कृति का अनेक रूपों में हुए प्रस्फुटन ही उत्तर आधुनिक कविता है।" समकालीन समय में लिखी जा रही कविता के बारे में राजेश जोशी का कहना है - "इस समय जो कविता लिख रहा है वह एक ऐसा कवि है जो शताब्दियों के बीच आवाजाही कर रहा है। उसके पास पिछली सदी में बने और टूटे स्वप्न और स्मृतियाँ भी हैं और इस सदी की नई वास्तविकताएँ भी। आज के कवि को उद्योग और प्रौद्योगिकी जैसी दो अलग-अलग चरित्रों वाली विकट प्रणालियों और उसकी जटिल वास्तविकताओं के बीच आवाजाही करनी पड़ती है। अंतःकरण विहीन मुक्त बाज़ार और लोकतान्त्रिक स्पेस को दिनेदिन कम करती प्रौद्योगिकी ने समाज की गति और संरचना को ही नहीं बदला है, हर रचना की प्राख्या और उपाख्या को भी बदल दिया है।"²

बाहरी तौर पर देखा जाये तो समकालीनता से जुड़ी इन दोनों परिभाषाओं में विरुद्धता नज़र आती है। एक तरफ आधुनिकता के केन्द्रीकरण की विरुद्ध समकालीनता की लोकतांत्रिक स्वरूप को उभारा गया है तो दूसरी तरफ समकालीनता की विकेंद्रित स्थिति की वजह से उभर रहे फासीवादी स्वरूप को दर्शाया

वर्ष : 23 अंक : 5 (पूर्णांक : 227)
अक्टूबर- 2018 मूल्य : 30 रुपए

अनुक्रम

साहित्यिक-वैचारिक मासिक अक्षर पर्व

संपादक

सर्वमित्रा सुरजन

संपादकीय पत्राचार

देशबन्धु कार्यालय

506, आईएनएस बिल्डिंग

9, रफी मार्ग, नई दिल्ली- 110001

फोन : 011-23718195

0120-4114404

ईमेल - aksharparv@gmail.com

आवरण

भुवन्धा रंजन

रेखाचित्र

राधेलाल विजधावने

शब्द संयोजन

महावीर प्रसाद साहू

रूप सज्जा

किशोर सिंह

पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. के लिए
प्रकाशक एवं मुद्रक शरद जैन द्वारा
पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. रायपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रस्तावना	ललित सुरजन	05
विचार		
साहित्य का भविष्यवाद	रमेश दवे	07
कविता		
सरगुजा के हाथी	रमाकांत श्रीवास्तव	09
आत्महंता	विद्या गुप्ता	11
एक बुजुर्ग की कथा में	महेश दर्पण	13
दोहे		
मजहब तेरे नाम पर	जय चक्रवर्ती	15
गुजराती कविताएं		
विस्मय	जगदीश जोशी	16
कहानी		
कोचिंग	अरुण अर्णव खरे	21
ज्योंही बब्बाजी ने अपनी गोद से उतारा मुन्नी को	संगीता झा	26
पुनरावृत्ति	गोविन्द उपाध्याय	28
साक्षात्कार		
हमने जो भी किया	रामकुमार कृषक से शिवकुमार अर्चन	31
संस्मरण		
ब्रह्मताल झील की ट्रेकिंग	विनीता यशस्वी	36
यात्रा वृत्तान्त		
सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान	जयप्रकाश श्रीवास्तव	41

अनुक्रम

शोध आलेख

सीता का वनगमन: विभिन्न रामायणों के संदर्भ से	डॉ. शोभा निगम	43
समकालीन हिन्दी कविता में बदलते राजनीतिक संदर्भ	महेश एस	48
हिन्दी दलित कहानियों में आर्थिक चेतना	डॉ. नितीन गायकवाड	50
उत्तराखंड की त्रासदी : भुतहा गाँव और		
शैलेश मटियानी की कहानियाँ	असीम अग्रवाल	54

आलेख

दरबारों के राग का व्यंग्यात्मक विच्छेदन: 'राग दरबारी'	पुनीत कुमार	58
अमरकांत की कहानियों में सामाजिक यथार्थ	सतेंद्र बह्मदुर सिंह	60

समीक्षा

जीवन के हर रंग से सजा काव्य संग्रह	पवन चौहान	64
असमर वजाहत का रचना संसार	डॉ. ललित श्रीमाली	67

व्यंग्य

पुस्तक विमोचन का सुख	विनोद कुमार विकी	69
----------------------	------------------	----

संस्मरण

जिनसे मिलकर मजबूत होता है विश्वास	विनीत तिवारी	70
-----------------------------------	--------------	----

उपसंहार

कृष्णाजी का जाना	सर्वमित्रा सुरजन	72
संस्कृति समाचार		74

साहित्यिक-वैचारिक मासिक

अक्षर पर्व

समकालीन समाज, साहित्य, कला और
संस्कृति पर केन्द्रित दस मासिक अंक
प्रत्येक का मूल्य 30 रु.

और साथ में

दो विशेषांक

प्रत्येक का मूल्य 50 रु.

जून में नवम्बर में
रचना वार्षिकी उत्सव अंक

वार्षिक शुल्क 300 रु. मात्र

ग्राहक शुल्क बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा
पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. रायपुर के नाम
इस पते पर भेजें

अक्षर पर्व

देशबन्धु प्रकाशन विभाग
देशबन्धु परिसर, रामसागरपारा, रायपुर
(छत्तीसगढ़) 492 001

संपादक

देशबन्धु कार्यालय

506 आईएनएस बिल्डिंग

9, रफी मार्ग, नई दिल्ली- 110001

रचनाकारों से निवेदन

1. सभी रचनाकारों से विनम्र अनुरोध है कि जहां तक संभव हो अपनी रचना ई-मेल से भेजने का कष्ट करें। यह आप और हम दोनों के लिए अधिक सुविधाजनक है।
2. कृपया रचना के अंत में अपना पूरा पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता लिखने का कष्ट करें।
3. आपका फोटो और संक्षिप्त जीवन परिचय भी ई-मेल से भिजवा दें ताकि हम उसे सुरक्षित कर लें।
4. यदि आप साधारण डाक से प्रकाशनार्थ सामग्री भेज रहे हैं तो वह दिल्ली के पते पर भेजें।
5. अक्षर पर्व की अधिकतर प्रतियां डाक से भेजी जाती हैं यदि प्राप्त में कोई व्यवधान हो या आपका पता बदल गया हो तो aksharparv@gmail.com इस पते पर ईमेल करें।
6. समीक्षा के लिए आपकी पुस्तकों का स्वागत है, किन्तु स्थान सीमित है। जिन पुस्तकों की समीक्षाएं स्वीकृत हैं, उनके प्रकाशन में भी समय लग सकता है, अतएव धैर्य रखें।

समकालीन हिन्दी कविता में बदलते राजनीतिक संदर्भ

शोध आलेख

महेश एस

कोच्चि विश्वविद्यालय, कोच्चि 22

स

समकालीन भारत का राजनीतिक संदर्भ इक्कीसवीं सदी में कदम रखने से पूर्व ही बेहद जटिल रूप धारण कर चुका था। अस्सी तक आते-आते भारतीय राजनीति में नवउदारतावाद के आसार गहराने शुरू होने लगा था और नब्बे तक यह पूर्ण रूप से अपना वर्चस्व स्थापित करने में कामयाब भी हुआ था। भारतीय राजनीति में आये इन परिवर्तनों को रेखांकित करते हुए रजनी कोठारी कहते हैं कि नवउदारतावाद के कारण न केवल राजनीतिक प्रक्रिया की स्वायत्तता खतरे में पड़ती है। बल्कि नवउदारतावादी चिंतन राष्ट्र राज्य, गैर सरकारी संगठनों और सभी जनोन्मुख राजनीतिक परियोजनाओं की स्वायत्तता नष्ट करने पर आमादा है। संक्षेप में भूमंडलीकरण और उदार आर्थिक नीतियों के जरिए यह चिंतन आमतौर पर राजनीति और खासतौर पर परिवर्तनकारी राजनीति की भूमिका का हलक करते हुए राज्य की संस्था को उसके शीर्ष स्थान से हटा देने में लगा हुआ है। वह उसकी जगह प्रायोगिकी पूंजी और बाजार को स्थापित करना चाहता है। इस बदले हुए राजनीतिक संदर्भ को समकालीन हिन्दी कविता बेहद राजनीतिक सजगता से अपना कण्ठेष्ट बना रही है जो पूर्व की राजनीतिक चेतना से बिल्कुल नये किस्म की है। कवि विजय कुमार कहते हैं आज़ादी के बाद जिस भारतीय परिवेश को हम मोटे तौर पर राजनीतिक-आर्थिक शब्दावली में सामंतवाद और नवउपनिवेशवाद के गठबन्धन से उपजे एक अवरुद्ध समाज के रूप में देखते हैं, बोध के स्तर पर पाते हैं कि संसदीय पार्टियों के क्षरण, समाज के आधारभूत स्तर पर होनेवाली हलचलों पर राज्य सत्ता की पकड़ के लगातार छीले पड़ने जाने और इन सबके साथ राष्ट्रीय राजनैतिक नेतृत्व की गरिमा लगातार खत्म होते जाने की प्रक्रिया ने एक नये प्रकार की राजनैतिक अभिव्यक्तियों और कण्ठेष्ट की नई परिभाषाओं को जन्म देना आरंभ किया है। इस बदले हुए राजनीतिक संदर्भ की अभिव्यक्ति अब मात्र राजनीति तक सीमित नहीं है। सामाजिक जीवन के हर पहलू आज किसी न किसी प्रकार अपनी एक अलग राजनीति तय कर रहे हैं। समकालीन कविता की इस बदली राजनीतिक चेतना के बारे में अरुण कमल का कहना है- सीधे-सीधे आह्वान, उद्बोधन या श्राप का स्थान अब व्यंग्य कठुणा मिश्रित कविता ले लेती है जो अपने निहितार्थ में कहीं से भी कम राजनीतिक नहीं है। वास्तव में यह पूरा परिवर्तन राजनीति की एक नयी समझ से परिचालित था, अन्तर्विरोधों-द्वन्द्वों को जाँचने की समझ से कि राजनीति

ऊपर-ऊपर की चीज़ नहीं बल्कि पूरे जीव-व्यापार में पैबस्त है।

नब्बे के शुरुआती दौर में ही समकालीन कविता में इस बदले हुए राजनीतिक संदर्भ की अभिव्यक्ति मिलने लगी थी। 1998 में प्रकाशित राजेश जोशी के दो पंक्तियों के बीच संग्रह की कविता एक शैतान से मुलाकात, इस बदली हुई राजनीतिक चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति देती है। एक शैतान से मुलाकात कविता के बारे में उमाशंकर चौधरी का विचार यहाँ दृष्टव्य है- कविता में दो शैतान हैं एक वह जो चुका हुआ है और एक वह जो अब वैश्विक पटल पर छाया हुआ है। राजेश जोशी ने इस शैतान के मार्फत से दो समाज, दो परिवेश को आमने-सामने रखा है। यह पहला शैतान तब का है जब हमारा समाज एक बंध समाज था और जहाँ शैतान इसी ज़मीन से तैयार होते थे। इसी ज़मीन पर चाकू-छुरी दिखाते थे। लेकिन यह नया शैतान वैश्विक ज़मीन पर तैयार होता है। यह चाकू-छुरी नहीं दिखाते हैं और ना ही यह खुलेआम हत्या करते हैं। राजेश जोशी अपनी इस कविता में रघुवीर सहाय की कविता रामदास में चित्रित शैतान की छवि को डिफेंस कर रहे हैं। और एक नए शैतान की छवि को फिट करते हैं। रघुवीर सहाय ने जहाँ यह दिखाकर कि सड़क के बीचों-बीच एक आम आदमी की हत्या हो सकती है, हमारे न्यायतंत्र पर उँगली उठानी चाहिए थी वहीं राजेश जोशी उससे बहुत आगे निकलकर एक ऐसे डर को दिखाना चाहते हैं जो आपके सामने नहीं है। एक अदृश्य कूर संस्कृति हमारे सामाजिक जीवन में इस कदर रज बस गयी है कि उसे पहचानना लगातार कष्टसाध्य होता चला जा रहा है। इस विकराल बाज़ार संस्कृति के सामने विश्व की सबसे बड़ी हमारी लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली लगातार अपनी प्रासंगिकता को बनाये रखने के जद्दोजहद में हाथ-पाँव मार रहे हैं। राजेश जोशी कहते हैं- उसने कहा मैं बहुत अकेला हो गया हूँ और थक गया हूँ

तुम्हें नहीं लगता कि मैं लगभग हास्यास्पद और निरीह हूँ

अब तो कोई बच्चा भी नहीं झरेगा मेरे कारनामों से
एक जोकर या खिलौने से ज्यादा नहीं है अब मेरी औकात

मुझे लगता है मैं बहुत पिछड़ा हुआ शैतान हूँ
यह दुनिया मेरी करतूतों से कहीं बहुत आगे निकल चुकी है।

भारतीय संविधान में भारतीय नागरिकों के लिए जिन